

भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अनु.सं. दीक्षांत समारोह प्रेस विज्ञप्ति (प्रथम दिवस)

64वां भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अनु.सं. दीक्षांत सप्ताह (8-13 फरवरी, 2026) का शुभारंभ 8 फरवरी, 2026 को एम.एससी./एम.टेक. विद्यार्थियों द्वारा महत्वपूर्ण स्नातकोत्तर शोध प्रस्तुतियों के साथ हुआ। यह सत्र डॉ. आर. सी. अग्रवाल, पूर्व उप महानिदेशक (कृषि शिक्षा), आईसीएआर, नई दिल्ली की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। डॉ. सीएच. श्रीनिवास राव, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अनु.सं., नई दिल्ली; डॉ. अनुपमा सिंह, अधिष्ठाता एवं संयुक्त निदेशक (कृषि शिक्षा) तथा डॉ. आर. एन. पड़ारिया, संयुक्त निदेशक (प्रसार) ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई। डॉ. बलराज सिंह, पूर्व कुलपति, एसकेएनएयू, जोबनेर; डॉ. कौशिक बनर्जी; प्रो. नीलम सांगवान, निदेशक (अनुसंधान एवं विकास प्रकोष्ठ) एवं अधिष्ठाता, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हरियाणा; डॉ. आर. एम. सुन्दरम, निदेशक, आईसीएआर-आईआईआरआर, हैदराबाद तथा डॉ. एच. एस. सिद्धू जूरी सदस्य थे।

डॉ. सीएच. श्रीनिवास राव ने गणमान्य अतिथियों एवं जूरी सदस्यों का स्वागत किया। उन्होंने आईएआरआई के विद्यार्थियों की असाधारण शैक्षणिक एवं सह-पाठ्यक्रम उपलब्धियों की सराहना की तथा सुझाव दिया कि वे समय के प्रति अत्यंत अनुशासित रहें और उत्तर देते समय सटीकता बनाए रखें। डॉ. राव ने बताया कि आगामी दो दिनों में कुल 40 प्रस्तुतियाँ निर्धारित हैं, जिनमें 19 एम.एससी. और 21 पीएच.डी. प्रस्तुतियाँ शामिल हैं। डॉ. अनुपमा सिंह ने सत्र के अध्यक्ष एवं जूरी सदस्यों का परिचय कराया। अपने वक्तव्य में उन्होंने उल्लेख किया कि शोधार्थियों की प्रस्तुति शैली कई बार संकाय सदस्यों से भी बेहतर होती है तथा आईसीएआर-आईएआरआई, नई दिल्ली के स्नातकोत्तर विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा किए जा रहे शोध कार्यों के महत्व पर बल दिया।

फसल सुधार से संबंधित प्रस्तुतियों में गेहूं में ऊष्मा सहनशीलता हेतु मैजिक पोपुलेरेशन से विकसित रेखाओं का आनुवंशिक विश्लेषण एवं मूल्यांकन, वाइम्ना वंश में बीज सुप्तावस्था: शारीरिक एवं संरचनात्मक अंतर्दृष्टि तथा श्वसन-आधारित त्वरित वर्णमिति जीवन्तता परीक्षण किट का विकास शामिल था। फसल सुरक्षा विद्यालय से प्रस्तुतियों में खरबूज मक्खी की पहचान हेतु समतापीय न्यूक्लिक अम्ल प्रवर्धन परीक्षण का विकास तथा रोगजनक विविधता और खरबूजे में गमी स्टेम ब्लाइट के प्रबंधन पर शोध शामिल था।

प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन स्कूल से प्रस्तुतियों में अभियांत्रिकीकृत बायोचार द्वारा मृदा में आर्सेनिक स्थिरीकरण का प्रभाव, लिम्बिन अपघटन का मानचित्रण तथा वैनिलिन और फेरुलिक अम्ल जैसे मूल्यवर्धित यौगिकों का उत्पादन, उच्च कार्बन डाइऑक्साइड एवं तापमान अंतःक्रिया की स्थिति में गेहूं की नाइट्रोजन उपयोग दक्षता बढ़ाने हेतु संशोधित यूरिया का संश्लेषण एवं विशेषण, मक्का की उत्पादकता, लाभप्रदता एवं पर्यावरणीय प्रभावों पर दलहनी एकीकरण एवं नाइट्रोजन प्रबंधन का प्रभाव, सिंचाई जल से रंगों के हरित शोधन हेतु विद्युत-क्षेत्र आधारित तकनीक, उर्वरक वितरण तंत्र का विकास एवं यूएवी-आधारित उर्वरक अनुप्रयोग प्रणाली का अनुकूलन शामिल था।

मूलभूत विज्ञान स्कूल की प्रस्तुतियों में मूंग अंकुरों में प्रकाश गुणवत्ता एवं वृद्धि नियामकों के सहक्रियात्मक प्रभाव द्वारा कैरोटिनाइड वृद्धि, डेटा विषमता एवं सह-परिवर्तियों को संबोधित करने हेतु मेटाजीनोमिक्स विश्लेषण का उन्नत सांख्यिकीय दृष्टिकोण, गेहूं में ऊष्मा तनाव सहनशीलता हेतु अल्प-अभिव्यक्त जीन की भूमिका का विश्लेषण तथा चने में प्रजनन अवस्था के दौरान ग्रीष्मकालीन उच्च तापमान तनाव से प्रेरित सूखा सहनशीलता पर शोध शामिल था।

उद्यानिकी विज्ञान स्कूल की प्रस्तुतियों में अमरुद जर्मप्लाज्म में रूपात्मक, जैवरासायनिक एवं आणविक विविधता विश्लेषण शामिल था तथा सामाजिक विज्ञान विद्यालय ने इंडो-गंगेटिक मैदानों में

जलवायु परिवर्तन अनुकूलन हेतु जोखिम संप्रेषण परामर्श सेवाओं का आकलन और भारत में उर्वरकों के रुझान एवं नीतिगत विकल्पों पर शोध प्रस्तुत किया।

कई उल्लेखनीय शोध परिणामों में शामिल थे:

- उर्वरक उपयोग दक्षता एवं समानता पर नीतिगत अंतर्दृष्टि, जिसमें डीबीटी एवं नीम-लेपित यूरिया का प्रभाव शामिल है।
- सटीक पोषक तत्व प्रबंधन हेतु यूएवी-आधारित उर्वरक अनुप्रयोग प्रणालियों का विकास।
- जलवायु-स्मार्ट नवाचार जैसे संशोधित यूरिया संरचनाएँ, ऊष्मा-सहनशील गेहूँ रेखाएँ तथा जलवायु-लचीली परामर्श प्रणालियाँ।
- जैव-सुदृढ़ीकरण, मेटाजीनोमिक्स, कीट निदान (LAMP परीक्षण) एवं सतत फसल उत्पादन प्रणालियों में प्रगति।
- अपशिष्ट जल शोधन, लिग्निन मूल्यवर्धन एवं उच्च-मूल्य कृषि जैव-उत्पादों में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ।

प्रदर्शित शोध भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अनु.सं. की कृषि शिक्षा में उत्कृष्टता, नवाचार-आधारित अनुसंधान तथा सतत खाद्य प्रणालियों के लिए क्षमता निर्माण के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह दीक्षांत सप्ताह युवा शोधकर्ताओं को सम्मानित करने का एक मंच सिद्ध हुआ, जिनका कार्य किसानों के कल्याण, पर्यावरणीय स्थिरता एवं राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देने की अपेक्षा है।

सत्र का समापन अध्यक्ष, जूरी सदस्यों, मंचासीन एवं सभागार में उपस्थित सभी संकाय सदस्यों और विद्यार्थियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

